1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

प्रबुधे न पुनस्कृधिः।।

यजु. 4/14

हे संकल्पशक्ति! हमें फिर से प्रबुद्ध कर जगा।

O Will power ! Do awaken us again from stumber.

वर्ष 40, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 जून, 2017 से रविवार 2 जुलाई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

यज्ञ विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताओं तथा यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने हेतु

जनकपुरी सी-3 एवं झिलमिल कालोनी में पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

★ अपनी आर्यसमाज में सभा की ओर से पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर लगवाने हेतु श्री सतीश चड्ढा जी, संयोजक (9540041414) से सम्पर्क करें।
★ एक साथ 100 अधिकतम लोगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था।
★ न्यूनतम डेढ़ घंटे के चार सत्र अथवा दो घंटे दो सत्र का कार्यक्रम।
★ एक दिन अतिरिक्त रखें तो प्रशिक्षण अत्युत्तम होगा – *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज जनकपुरी सी-3 में 22 से 24 जून 2017 के मध्य तथा आर्यसमाज झिलमिल कालोनी में 25 से 26-28 जून तक आयोजित किया गया। शिविरों में लगभग 100-115 व्यक्तियों ने यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया पहली बार आर्यसमाज से जुड़े अनेक बन्धुओं ने भी यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि "इन शिविरों की सफलता व आर्य बन्धुओं की यज्ञ विज्ञान की जिज्ञासा को देखते हुए यह शिविर हर आर्य समाज में आयोजित करने की व्यवस्था हेतु सभी को प्रयास करना चाहिए। यज्ञ के इन प्रशिक्षणों में जो शोध हुए हैं उनका विस्तारपूर्वक वर्णन आर्य बन्धुओं को दिया जा रहा है ताकि जो यज्ञ पाप और पुण्य के नाम से किए जा रहे हैं उस भ्रांति को दूर करते हुए यज्ञ से वर्तमान वायु मण्डल में जो शुद्धता आएगी वह सारे मानव जाति के लिए लाभ दायक है। इसमें कोई पाप

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

आगमी यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम रोहिणी सैक्टर- 7 में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के अन्तर्गत 18 से 22 जुलाई 2017 तक आर्य समाज सैक्टर 7 रोहिणी में प्रातः 7 से 8.30 बजे तक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। पंजीकरण एवं जानकारी के लिए **श्री सुरेन्द्र चौधरी जी (मो. 9212066425) अथवा श्री संजीव गर्ग जी** (मो. 9311201046) से सम्पर्क करें। – ***संयोजक***

दिल्ली सभा के अन्तर्गत पश्चिम दिल्ली आर्यसमाजों की प्रथम गोष्ठी सम्पन्न

द्वितीय गोष्ठी 2 जुलाई, 2017 को आर्यसमाज कीर्ति नगर में दोपहर 2:30 बजे से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियां आरम्भ हो गई है। इसके अन्तर्गत पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र की प्रथम बैठक 25 जून, 2017 को सायं 3:15 से 7:15 बजे तक आर्यसमाज डी ब्लाक विकास पुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 26 आर्यसमाजों के लगभग 90 पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। सर्वप्रथम महामंत्री श्री विनय आर्य ने आर्य प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए गोष्ठी के उद्देश्य प्रस्तुत किये। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री ओ.पी. घई ने की तथा सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने सर्वप्रथम गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए गोष्ठी का शुभारम्भ किया। गोष्ठी अध्यक्ष श्री ओ.पी. घई का सम्मान सभा मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य ने व आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

रविवार 9 जुलाई, 2017 प्रातः 10 बजे से

स्थान : आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

समस्त प्रतिभागी अभिभावकों सहित समय पर पधारें। जो आर्य परिवार अभी तक पजीकरण नहीं करा सकें हैं उनके लिए सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी।

वेद-स्वाध्याय

सोमपान से अमरता

अपाम सोममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान्।
किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य।। ऋ. 8/48/3
ऋषिः **प्रगाथः काण्वः।।** देवता - **सोमः।।** छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - सोमं अपाम = मैंने सोम का पान किया है, **अमृताः अभूम** = अमर हो गया हूं। **ज्योतिः अगन्म** = प्रकाश पा लिया है। **देवान् अविदाम** = देवों को प्राप्त हो गया हूं, देव हो गया हूं, मैंने दिव्यता पा ली है, अतः अब **नूनम्** = निश्चय से **अरातिः** = शत्रु, दान का अभाव **अस्मान् किं कृणवत्** = हमारा क्या करेगा और **मर्त्यस्य धूर्तिः** = मरणशील मनुष्य की हिंसा **अमृत** = हे अमृतदेव! **किम्** = मेरा क्या बिगाड़ेगी!

विनय - मैंने अमर करने वाले ज्ञानामृत का पान कर लिया है, मैं तृप्त हो गया हूं, अमर हो गया हूं। अब मैं मृत्यु से पार हो गया हूं, क्योंकि मैंने देख लिया है कि मैं अजर-अमर हूं, नित्य हूं, सनातन हूं, न कभी पैदा हुआ हूं और न कभी मर सकता हूं। यह सब मैं ज्ञान के प्रकाश में स्पष्ट देख रहा हूं। मैं प्रकाश के राज्य में पहुंचा हुआ हूं, जहां किसी भ्रम व संशय को स्थान नहीं है। मैं अब मरनेवाला मनुष्य नहीं रहा हूं, देव हो गया हूं, मैंने देवलोक पा लिया है। अब मेरा न कोई मित्र है और न शत्रु। मेरे लिए संसार में विघ्न-बाधा कोई वस्तु नहीं रही है। जो बेचारे अज्ञानी मुझे अपना शुत्र समझते हैं, मुझे सहायता देना रोककर हानि पहुंचाना चाहते हैं- वे जानते नहीं। उनके किये से भला मेरा क्या बिगड़ सकता है? मुझ परितृप्त-निष्काम पुरुष को वे क्या हानि पहुंचा सकते हैं? मुझ अमर को मरणशील मनुष्य की कौन-सी हिंसा, कौन-सा वध मार सकता है? हे मेरे अमृत परमेश्वर! वे अमृतपान को कुछ भी नहीं जानते। तू उन्हें भी अमृत का तनिक-सा आनन्द चखा दे, तो वे जान जाएं कि मरणशील मनुष्य कितना तुच्छ है और उसके हाथ में पकड़ा हुआ हिंसा का हथियार और भी अधिक क्षणभंगुर एवं तुच्छ है! मनुष्य अपने मर्त्यपन की अवहेलना को अनुभव करने लगे तो वह अमर बनने के लिए, देव बनने के लिए व्याकुल हो उठे। तब मार-काट, हिंसा, द्वेष कहां रहे? तब किसी को बिगाड़ने की आवश्यकता न रहे, सबको बनाना ही काम हो जाए किसी को मारने, नाश करने की आवश्यकता न रहे, सबको जीवित करने का ही काम रह जाए। अहो, अमर को मारने की इच्छा करने वाले कितना व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं! परितृप्त ज्ञानी देव को हानि पहुंचाना चाहने वाले कितने भ्रम में हैं! अपनी शक्ति का कितना दुरुपयोग कर रहे हैं? हे परमेश्वर! तू उनपर दया कर।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

रमजान माह - शान्ति का या जिहाद का ?

श्री नगर की जामा मस्जिद के बाहर सुरक्षा में तैनात पुलिस अधिकारी मोहम्मद अयूब पंडित की भीड़ ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। यह इस्लाम में पवित्र मानी गई रात शब-ए-कद्र का मौका था। इसके बाद पाकिस्तान में करांची, क्वेटा और मकरान में एक के बाद एक बम धमाके होने से मासूमों की हत्या यहीं नहीं रुकती। 22 जून को अफगानिस्तान के हेलमंड प्रांत के लश्करगाह में एक बैंक में हुए धमाके में लगभग 29 लोगों की मौत हो गई और अनेक घायल हुए। 27 मई से इस्लाम धर्म को मानने वालों के लिए रमजान का पहला दिन था। एक महीने चलने वाले रमजान के दौरान प्रार्थना और उपवास किया जाता है। लेकिन अफगानिस्तान के पूर्वी हिस्से में हुए एक आत्मघाती कार बम धमाके में कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई। तब से लेकर अभी तक मजहबी हत्याओं का यह सिलसिला बदस्तूर जारी है। बल्कि यह आंकड़ा प्रतिवर्ष की तरह ही सेंकड़ों के पार पहुँच गया है। ऐसा नहीं कि रमजान में भीषण रक्तपात की यह कोई नई शुरुआत है बल्कि दिन के उजाले में इतिहास उठाकर देखें तो पिछले या उससे पिछले वर्ष, हर वर्ष और ज्यादा पीछे जायें तो करीब 1400 वर्षो से ये सिलसिला लगातार जारी है। हालांकि इस्लामिक कैलेंडर में रमजान को सबसे मुबारक और आध्यात्मिक महीना माना जाता है। तीस दिन के लिए मुसलमान दिन के वक्त खाना नहीं खाते और पानी नहीं पीते। उनका मानना है कि इस दौरान अल्लाह उन्हें हर भूल के लिए क्षमा कर देता है। मस्जिद में नमाजियों की भीड़ होती है जो ऊपर वाले से क्षमा और दुआ मांगने आते हैं। लेकिन उसके उलट इस्लाम के रक्षक के रूप में दुनिया में अपनी छवि गढ़ने वाले कट्टरपंथी ऐसा भी मानते हैं कि इस महीने में जीत दर्ज करनी और लूट मचानी चाहिए। वह मानते हैं कि ये सही मौका है जब लड़ाई को दोगुना तेज कर देना चाहिए। इसलिए इस दौरान वह सामान्य से ज्यादा हमले करते हैं।

खबर है मक्का में काबा की मस्जिद को निशाना बनाने की एक चरमपंथी योजना को नाकाम कर दिया गया है। वैसे देखा जाये तो रमजान को युद्ध का महीना मानने की प्रथा इस्लामिक इतिहास से ही आती है। पैगंबर मोहम्मद ने अपनी पहली जिहाद, जिसे बद्र की लड़ाई के नाम से जाना जाता है, वर्ष 624 में रमजान के महीने में ही लड़ी थी। इसके आठ साल बाद उन्होंने रमजान के ही महीने में मक्का पर जीत हासिल की थी। शायद इस कारण भी पिछले वर्ष सीरिया में अलकायदा के आधिकारिक संगठन नुस्रा फ्रंट ने रमजान को विजय अभियान का महीना बताया था और रमजान के नजदीक आते ही आईएस के प्रवक्ता अबु मोहम्मद अल-अदनानी ने दुनियाभर के अपने समर्थकों से कहा था, तैयार हो जाओ, काफिरों के लिए इसे आपदा का महीना बनाने के लिए तैयार हो जाओ, शायद यही वह अपील थी जिसने उमर मतीन, जैसे अकेले आतंकी को फ्लोरिडा के ऑरलैंडो में एक क्लब में 49 लोगों की हत्या के लिए प्रोत्साहित किया था।

अभी ताजा घटनाक्रम पर नजर डालें तो खुद को इस्लाम का सबसे बड़ा रखवाला कहने वाले इस्लामिक स्टेट ने मूसल में सबसे पुरानी अल-नूरी मस्जिद को उड़ा दिया है। यह वही मस्जिद है जहाँ से आईएस के नेता अबू बक्र अल-बगदादी ने 2014 में खिलाफत की घोषणा की थी। दरअसल आईएस जिस कट्टरवादी इस्लाम में यकीन रखता है, उसमें उन्हें लगता है कि इस दरगाह के होने की वजह से लोगों का ध्यान अल्लाह से परे हट रहा है, इसलिए इसे ढहा देना चाहिए. ''आधुनिक जिहाद के जनक'' माने जाने वाले अब्दुल्ला अजाम ने 1980 के दशक में अफगानिस्तान में अरब विदेशी लड़ाकों का नेतृत्व किया था। वह तर्क देते हैं कि जिहाद की उपेक्षा करना एक किस्म से उपवास और नमाज छोड़ने के बराबर है। बाद में उन्होंने लिखा, जिहाद, इबादत करने का सबसे बेहतरीन तरीका है। इस रास्ते से ही मुसलमान को जन्नत हासिल हो सकती है।

जिहाद और रमजान से उसके सम्बन्ध की इन व्याख्याओं को लेकर आम मुसलमान निराश हो सकता है। उनके लिए यह महीना है संयम और खुद के अंदर झांकने का है लेकिन इस्लाम में संकट कुछ ऐसा है कि चरमपंथियों की व्याख्या, प्रामाणिकता और हिंसा समझ से परे है कट्टरपंथी तो यह भी मानते हैं कि रमजान के महीने में अगर ज्यादा नमाज पढ़ने और दान देने को प्रोत्साहन दिया जाता है तो ज्यादा रक्तपात को क्यों नहीं? यदि इसको इस तरीके से देखेंगे तो समझ में आएगा कि आखिर क्यों हर वर्ष रमजान के महीने में इतनी भयानक घटनाएँ, हत्याएं रक्तपात होता हैं।

हाल की घटनाओं ने दुनिया के मुसलमानों में यह एहसास ताजा कर दिया है कि इस्लाम का डर बाकी शेष दुनिया में बढ़ चुका है। यह मसला महज नस्लपरस्तों और अल्पसंख्यकों का ही नहीं बल्कि समाज की एक असली सच्चाई भी है। इन सबके बाद यदि अपनी नजर विश्व के अन्य कोनों में दौड़ायें तो 11 सितंबर, 2001 के हमलों को 15 साल से अधिक हो गए हैं, लेकिन सही मायने में पश्चिमी समाज में इस्लाम का असली डर अब फलफूल रहा है। पिछले दो साल की राजनीतिक घटनाओं ने इन सबमें बड़ी भूमिका निभाई है। ब्रिटेन में जून से पहले तीन चरमपंथी हमलों में शामिल सारे लोग मुसलमान थे जिन्होंने जिहादी इस्लाम का हवाला देकर लोगों का मजहब के नाम पर कत्ल किया।

11 सितंबर के बाद की अवधि में यह सोच तो बढ़ रही थी कि मुसलमान पश्चिमी समाज के लिए एक समस्या है और उनकी सोच और धर्म का पश्चिमी समाज के मूल्यों से कोई तालमेल नहीं है। लेकिन हाल ही के हमलों और खूनी खेल की आहट अपनी देहलीज पर देख यूरोप वासी भी खुद को असहज महसूस करने लगे हैं। वेस्टमिंस्टर, मैनचेस्टर एरीना और लंदन ब्रिज के पास होने वाले हमलों के बाद लोगों ने खुलेआम मुसलमानों को कसूरवार ठहराना शुरू कर दिया। मुसलमानों को केवल या तो असहिष्णु या रूढ़िवादी या फिर अति आधुनिक और धर्म से दूर रहने वालों के रूप में देखा जाता है और इन दोनों विरोधी विचारों के बीच सोच रखने वाले ब्रिटिश मुसलमानों को जान-बूझकर नजरअंदाज किया जाने लगा है। आलम यह कि लोग मुसलमान होने पर शर्मिंदगी तक महसूस करने लगे हैं और लोगों को समझाने की उनकी वह हर कोशिश बेकार जा रही कि इस्लामिक चरमपंथी उनके धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं लेकिन उनकी यह कोशिश उस समय और बेकार हो जाती है जब रमजान के महीने में ही अंधाधुंध फायरिंग या फिर बम धमाकों के बीच मासूम लोगों की चीख पुकार सुनाई देती है। -***सम्पादकीय***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ऋषि दयानन्द का भक्तिवाद

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

ऋषि दयानन्द के धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के कार्य में अधिक सक्रिय रहने तथा उनके राष्ट्रीय जागरण के प्रथम पुरोधा होने के कारण अनेक लोगों में यही धारणा बन गई है कि भारत की आध्यात्मिक चेतना को जगाने तथा भगवद् भक्ति के प्रसार में उनका योगदान अल्प है। ऐसा विचार उन लोगों का है जिन्होंने दयानन्द का सूक्षम अध्ययन नहीं किया। गहराई से देखें तो पता चलता है कि दयानन्द का गृहत्याग और संन्यास ग्रहण जिस विशिष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखकर हुआ था, उसके पीछे अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करने की उनकी तीव्र ललक ही थी।शिवरात्रि-प्रसंग से उन्होंने सीखा कि निखिल विश्व ब्रह्माण्ड का नियंत्रण करने वाली सत्ता जड़ नहीं हो सकती। वह कल्याणकारी शिव कौन है तथा कैसा है जिसकी वंदना वेदों में अनेक मिलती है? अपने घर में घटित हुए मृत्यु-प्रसंगों ने उन्हें जिन्दगी और मौत के रहस्य को जानने की प्रेरणा दी। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने अपने योग गुरुओं से उस 'राजयोग' का प्रशिक्षण प्राप्त किया जो समाधि सिद्धिपूर्वक परमात्मा का साक्षात्कार कराता है। भावी जीवन में परम देव परमात्मा के प्रति उनका प्रणत: भाव सदा रहा। अपने महान् कार्यो की पूर्ति में उन्होंने परमात्म देव की सहायता की याचना की और आजीवन एक आस्तिक भक्त का जीवन बिताकर अपने आराध्य के प्रति 'स्वयं' को अर्पण कर दिया। स्वामी जी की धारणा थी कि धर्म, समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने का जो महद् अभियान उन्होंने चलाया है उसमें परमात्मा की प्रेरणा तथा सहायता ही सर्वोपरि रही है। वे परमात्मा के अनन्य उपासक थे। समर्पण भाव को लेकर जगन्नाटक के सूत्रधाार के सम्मुख आने वाले वे एक ऐसे विनम्र सेवक थे जिन्होंने अत्यन्त भाव प्रवण होकर अपने आराध्य देव से कहा था-'आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते।' शास्त्रार्थ समर में उतरने से पहले दयानन्द दीर्घकाल तक परमात्मा की उपासना करते थे मानो अपने आराध्य से सत्य पक्ष की विजय दिलाने की प्रार्थना करते हों। लोकहित के अपने सभी कार्यो और अनुष्ठानों में वे परमात्मा को अपना परम सहायक मानते थे।

भक्तिवाद का उदय और भक्ति सूत्रों की रचना

छह दर्शन शास्त्रों की तर्ज पर कालान्तर में नारद और शाण्डिल्य के नाम से भक्तिसूत्र रचे गए। इनमें सूत्र शैली में भक्ति तथा उसके आनुषंगिक प्रसंगों की विस्तृत मीमांसा प्रस्तुत की गई है। आचार्य शाण्डिल्य ने भक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया है' या परा अनुरक्ति : ईश्वरे सा भक्ति:। अर्थात् परमात्मा के प्रति पराकोटि की अनुरक्ति (प्रेम) ही भक्ति है। इन ग्रन्थों में नवधा भक्ति का जो उल्लेख मिलता है उससे अनुमान होता है कि भक्तिसूत्रों की रचना उस युग में हुई थी जब पौराणिक मत का प्रचलन हो चुका था तथा जनता में प्रतिमा-पूजन, अवतारवाद आदि की धारणाएं चल पड़ी थीं। इन ग्रन्थों में ब्रज गोपिकाओं आदि के सन्दर्भ दिये गए हैं, वे इन्हें पुराणों के परवर्ती काल का होना बताते हैं।

ऋषि दयानन्द ने परमात्मा की भक्ति की और व्यक्ति का मनोनिवेश करने वाला एक ग्रन्थ लिखा था-'आर्याभिविनय' उनका विचार था चारों वेद संहिताओं में प्रत्येक से न्यून से न्यून पचास मंत्रों को लेकर उनकी भगवद्भक्ति से ओतप्रोत भावपूर्ण व्याख्या की जाये। इस ग्रंथ के प्रथम तथा द्वितीय प्रकाश (ऋग्वेद के 53 तथा यजुर्वेद के 55 मंत्र युक्त) लिखे गए तथा छपे। अवशिष्ठ साम तथा अथर्ववेद के विनय प्रधान मंत्रों की व्याख्या वे नहीं लिख सके। यहां व्याख्यात मंत्रों की परमात्मा की स्तुति है या प्रार्थना, इसका संकेत वे मन्त्रारम्भ में कर देते हैं। ग्रन्थारम्भ के स्वरचित श्लोकों में दयानन्द ने परमात्मा की भावपूर्ण स्तुति की है-

सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तो योन्यायकृच्छुचि:। भूयात्तमा सहायो नो दयालु: सर्वशक्तिमान्।।

अर्थात् जो परमात्मा सबका आत्मा, सत्, चित, आनन्दस्वरूप, अनन्त, अज, न्याय करने वाला, निर्मल, सदा पवित्र, दयालु सब सामर्थ्य वाला, हमारा इष्टदेव है, वह हमको सहाय नित्य होवे।

साथ ही इन श्लोकों मे वे यह संकेत देते हैं कि समस्त लोगों के हित तथा परमात्मा के ज्ञान के लिए वे मूल मंत्रों के साथ-साथ उनका लोक-भाषा में व्याख्यान जन साधारण को बोध कराने के लिए दे रहे हैं। दयानन्द की सम्मति में जो ब्रह्म विमल, सुखकारक, पूर्णकाम, तृप्त, जगत् में व्याप्त है वही वेदों से प्राप्य है। जिसके मन में इस ब्रह्म की प्रकटता (यथार्थ ज्ञान) है, वही मनुष्य ईश्वर के आनन्द का भागी है और वही सदैव सबसे अधिक सुखी है। ऐसे मनुष्य को धन्य मानना चाहिए। इन प्रास्ताविक श्लोकों से हमें दयानन्द के भक्तिवाद को समझने में सहायता मिलती है।

आर्याभिविनयम् की रचना केवल ईश्वर-भक्ति में लोगों को नियोजन करने के लिए ही की गई हो, ऐसी बात नहीं है। दयान्नद मध्यकाल के अनके भक्तों की भांति लोगों को भाग्यवाद तथा पुरुषार्थहीनता का पाठ पढ़ाने वाले नहीं थे। वे आर्य जनों में पुरुषार्थ स्वदेश प्रेम तथा स्वातन्त्रय लिप्सा के भावों को देखने के इच्छुक थे। यही कारण है कि आर्याभिविनय में एक और प्रभुभक्ति तथा अपने आराध्य के प्रति समर्पण की भावना दिखाई पड़ती है तो साथ ही उस 'राजाधिराज परमात्मा' से स्वराज्य तथा आर्यो (सत्पुरुषों) के अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य की याचना भी की गई है। परमात्मा के प्रति दयानन्द की आनन्द प्रीति को दखना चाहें तो इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम व्याख्यात ऋग्वेद के मन्त्र-शं नो मित्र:शं वरुण:' की व्याख्या के आरम्भ में परमात्मा के प्रति किये गए सम्बोधनों की छटा को देखें। यहां न्यनातिन्यून सत्ताईस सम्बोधनों से दयानन्द ने अपने आराध्य परमात्म-देव को सम्बोधित किया है। इनमें से अनेक सम्बोधनों में अनुप्रास प्रधान शब्दों का सौन्दर्य दर्शनीय है। तथा-विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, विश्वसविलासक तथा निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव आदि। एक ओर यदि परमात्मा को 'सज्जन सुखद' कहा तो साथ ही उसे 'दुष्टसुताड़न' कहना भी वे नहीं भूले। दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा चतुर्विध पुरुषार्थ के प्रदाता हैं-वे यदि धर्म सुप्रापक हैं तो अर्थ-सुसाधक तथा सुकामवर्द्धक भी हैं। मोक्षप्रदाता तो वह हैं ही-यदि वे 'राज्य विधायक' हैं तो 'शत्रु विनाशक' भी हैं। वस्तुत: इस ग्रन्थ को लिखकर दयानन्द ने भारत के भक्तिसिद्धान्तों में एक नूतन क्रांति की थी, अत: दयानन्द के भक्तिवाद का तात्त्विक अध्ययन अपेक्षित है।

इस ग्रन्थ के अन्य मंत्रों के व्याख्यानों में उन्होंने परमात्मा के लिए जो सम्बोधन सूचक शब्द लिखे हैं, वे भी व्यंजनापूर्ण हैं। जब वे परमात्मा को 'महाराजाधिराज परमेश्वर' कहकर सम्बोधित करते हैं तो उनकी प्रार्थना होती है- 'हमको साम्राज्यधिकारी सद्य: कीजिए।' उनकी विनय है कि हम सुनीतियुक्त हों जिससे कि हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े। (प्रार्थना सं. 17) 'वयं' जयेम त्वया युजा' (ऋ 1/102/4) मन्त्र की व्याख्या के आरम्भ में उन्होंने परमात्मा को 'महाधनेश्वर'

- शेष पृष्ठ 7 पर

बोध कथा

देवता और असुरों में अन्तर

देवताओं और असुरों की एक मनोरंजक कहानी आपको सुनाता हूं। एक धनी सज्जन ने एक बार बहुत-से विद्वानों को भोजन का निमंत्रण दिया। अतिथियों में देवता थे और असुर भी। जब अतिथि एकत्रित हो गये तो असुरों ने गृहपति से कहा-''आप लोग सदा हमारे साथ अन्याय करते हो। अब हम अन्याय को सहन नहीं करेंगे।''

गृहपति ने पूछा-''असुर विद्वानो! आपके साथ कौन-सा अन्याय होता है।''

असुर बोले-''विद्या में, ज्ञान में, शक्ति में, हर बात में हम देवताओं से आगे हैं। इतना होते हुए भी जहां कहीं भी हम दोनों को बुलाया जाता है, वहां पहले देवताओं को भोजन मिलता है, बाद में हमको। यह अन्याय सहन करने योग्य नहीं है। आप देवताओं के साथ हमारा शास्त्रार्थ कराइये, किसी भी विषय पर, किसी भी बात के सम्बन्ध में। यदि हम जीत जायं तो अन्याय को समाप्त कीजिये। अन्यथा हम इस अन्याय को चलने नहीं देंगे।''

गृहपति ने कहा-''आप क्रोध न कीजिये, पहले आप ही भोजन करेंगे, देवता पीछे खा लेंगे, परन्तु एक शर्त माननी होगी।''

असुरों ने पूछा-'' क्या शर्त है?''

गृहपति ने कहा-''यह कि आपके दोनों हाथों के साथ कोई तीन-तीन फुट की लकड़ियां बांध दी जायेंगी। एक लकड़ी दायें हाथ के साथ, दूसरी बायें हाथ के साथ इस प्रकार आपको भोजन खाना होगा।''

असुरों ने कहा-''ऐसे ही सही, हम खा लेंगे।'' बांध दी गई लकड़ियां। असुर लोग बैठ गये। सामने पत्तल रख दिये गये। उनमें भोजन परोसा जाने लगा। पूरी, कचौरी, हलवा, खीर रसगुल्ले, गुलाब जामन, गोभी मटर, आलू, टमाटर सब रख दिये गये।

गृहपति ने कहा-''अब खाओ असुर विद्वानों!'' असुरों ने खाने के लिए हाथ बढ़ाए। हाथों में लकड़ियां बंधी थीं। उन्होंने हाथ से पूरी उठाई कि मुंह में डालें, परन्तु वह मुंह में पहुंचने की बजाए सिर के पीछे जा गिरी। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु का बुरा हाल हुआ। आधे घण्टे तक असुर लोग प्रयत्न करते रहे, परन्तु एक भी ग्रास उनके मुंह में नहीं गया।

आधे घण्टे के पश्चात् गृहपति ने कहा-''अब उठो असुरो! आपका समय हो गया। अब देवता भोजन करेंगे।''

असुर बेचारे भूखे ही उठ गये। स्थान को साफ किया गया। नई पत्तलें रखी गईं। उसके पास देवताओं को बैठा दिया गया। उनके हाथों में भी तीन-तीन फुट की लकड़ियां बांध दी गईं। उनकी पत्तलों में खाना परोस दिया गया। उन्हें भी कहा गया-''अब खाओ देवताओ!''

देवताओं ने कहा-''हम खायेंगे अवश्य, परन्तु एक-दूसरे के सामने बैठकर खायेंगे। हम आधे लोग इधर बैठेंगे, आधे उधर, आमने सामने। हमारी पत्तलें हम लोगों के सामने रख दीजिये।''

गृहपति ने ऐसा ही किया। देवता एक-दूसरे के सामने बैठ गये। एक देवता ने अपने हाथों से सामने बैठे देवता की पत्तल से पूरी उठाई, उसके मुंह में डाल दी। सामने बैठे देवता ने पहले देवता के आगे रखी पत्तल से कचौरी उठाई, उसके मुंह में डाल दी। इस प्रकार सब देवताओं ने एक-दूसरे को भोजन खिला दिया, वस्तुएं समाप्त कर दीं, सबका पेट भर गया।

यह है देवता और असुर में अन्तर! असुर केवल अपना पेट भरना चाहता है, परन्तु भर नहीं पाता। देवता दूसरे को खिलाकर प्रसन्न होता है। औरों को खिलाने में उसका अपना भी पेट भर जाता है।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

भारत, पाक और बंगलादेश में मुस्लिम नहीं !

....आज से लगभग 1200 वर्ष पहले मुस्लिमों ने संगठित होकर आर्यावर्त पर हमला करना शुरू किया था और इन 1200 वर्षों में उन्होंने भले ही आशातीत सफलता न पाई हो परन्तु वे आर्यावर्त पर काफी हद तक चोट करने में सफल हुए। उन्होंने भारतवर्ष के उन भागों का लगभग पूरी तरह से इस्लामीकरण कर दिया जो पश्चिम में पड़ते थे और अफगानिस्तान और पाकिस्तान नामक दो देश बनाने में भी सफल हो गए।.....

खुद को इस्लामी राष्ट्र के तौर पर प्रदर्शित करने वाले पाकिस्तान को सऊदी प्रिंस सुलेमान ने अरब का गुलाम बताया है। उनके मुताबिक यहां के मुसलमान दोयम दर्जे के मुस्लिम हैं। उनका मानना है कि सही मायने में मोहम्मद साहब के असली वंशज उन्हीं के देशवासी हैं। वह पाकिस्तान को इस्लामी देश भी नहीं मानते हैं। उनके मुताबिक पाकिस्तान ही नहीं बांग्लादेश के लोग भी मुस्लिम नहीं हैं, बल्कि ये वह लोग हैं जिन्होंने हिंदू धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म को अपनाया है। लिहाजा यह मुस्लिम नहीं हैं। उनके मुताबिक खुद को मुस्लिम कहने वाले यहां के लोग दरअसल हिन्दू-मुस्लिम हैं। प्रिंस सुलेमान भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुसलमानों को अल हिन्दी- मुस्कीन कहते हैं। इसका अर्थ है कि वह दोयम दर्जे के मुस्लिम हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिमों के लिए सऊदी प्रिंस का यह बयान वास्तव में ही काफी तकलीफ देने वाले होगा। इसका जिक्र पाकिस्तान के एक पत्रकार ने ट्विटर पर किया है।

प्रिंस सुलेमान का यह बयान उस समय आया जब भारतीय उपमहाद्वीप में बसे मुस्लिम खासकर भारत में खुद को मुस्लिम दिखाने के लिए इस्लाम से जुड़े प्रतीकों, चिह्नों भारत की संस्कृति और सभ्यता को रौंदने वाले बाहरी आक्रमणकारियों को श्रेष्ठ दिखाने के तमाम हथकंडे अपना रहे हैं चाहे उनका प्रदर्शन इस्लामिक पहनावे को लेकर हो या फिर तीन तलाक जैसी इस्लामिक रीति-रिवाज को कायम रखने के लिए। वह खुद का दिखावा कर यहाँ की मूल संस्कृति, सभ्यता संस्कार आदि के विपरीत जाने की होड़ में शामिल रहना चाहते हैं।

सऊदी प्रिंस का बयान भले ही यहां के मुस्लिमों के लिए कड़वा घूंट हो लेकिन पाकिस्तान का पढ़ा लिखा तबका इस बात को कई बार स्वीकार कर चुका है। अभी पिछले दिनों एक न्यूज डिबेट में पाकिस्तान की मशहूर सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार फौजिया सईद ने स्वीकार करते हुए कहा था कि हम लोगों को नहीं भूलना चाहिए कि हम हिन्दू से मुस्लिम बने हैं इससे पहले पाकिस्तान के जाने-माने लेखक हसन निसार ने वहां के एक प्रसिद्ध टीवी प्रोग्राम ''मेरे मुताबिक'' में कहा था कि पाकिस्तान, हिन्दुस्तान और बांग्लादेश में मुस्लिम दहशतगर्दी तो होती है किन्तु यहाँ आईएस जैसा खूंखार आतंकी संघटन इस तरह नहीं पनप सकता क्योंकि हम लोग हिन्दू से मुसलमान बने हैं अभी हमारे खून में हिन्दू वाली सहनशीलता शेष है।

एशिया (भारत, पाकिस्तान, बांग्ला देश) के मुसलमान अपने आपको अरबों का वंशज मानते हैं और अपने आपको अरबी दिखाने के जुनूनी होते हैं लेकिन 50 साल किसी अरब देश में नौकरी करने पर भी किसी एशिया के मुसलमान को वहाँ की नागरिकता नहीं मिलती। कोई एशिया का मुसलमान वहाँ की अरबी मुसलमान औरत से शादी नहीं कर सकता और अगर कोशिश करे तो मार दिया जाता है।

इस बात को कौन नहीं जानता कि आज से लगभग 1200 वर्ष पहले मुस्लिमों ने संगठित होकर आर्यावर्त पर हमला करना शुरू किया था और इन 1200 वर्षों में उन्होंने भले ही आशातीत सफलता न पाई हो परन्तु वे आर्यावर्त पर काफी हद तक चोट करने में सफल हुए। उन्होंने भारतवर्ष के उन भागों का लगभग पूरी तरह से इस्लामीकरण कर दिया जो पश्चिम में पड़ते थे और अफगानिस्तान और पाकिस्तान नामक दो देश बनाने में भी सफल हो गए। हालांकि यह सफलता विश्व के अन्य हिस्सों में मिली सफलता से काफी कम है क्योंकि इस्लामिक आक्रमणकारी विश्व में जहाँ-जहाँ गए, उन-उन सभ्यताओं को पूर्णत: नष्ट करके एक बर्बर कृत्रिम और थोपी गयी असभ्यता लाद दी। किन्तु यहाँ के लोगों का धर्म में अगाध प्रेम होने के कारण सम्प्रदाय परिवर्तन इतना आसान काम न था जिसके कारण आक्रमण दर आक्रमण के बावजूद ये इस्लामी शासक भारत वर्ष में पूर्णरूप से इस्लामीकरण करने में असफल रहे परन्तु इन मुस्लिमों ने एक काम बहुत ही चालाकी से कर दिया वह था यहाँ के मजबूर हिन्दुओं को मुस्लिम सम्प्रदाय में बदलना। इस सम्प्रदाय परिवर्तन के लिए जो सबसे आसान शिकार नजर आये वे विभिन्न कारणों से असहाय लोग थे।

वे गरीब लोग शिकार बने जो मुस्लिम शासकों द्वारा लगाये गए जजिया कर को देने में असमर्थ थे और भुखमरी से बचने के लिए मुस्लिम बन गए, वे हिन्दू परिवार जिनके पुरुष इनसे युद्ध के दौरान मार दिए गए तो उनकी बीबी को अपनी रखैल और उनके बच्चों को गुलाम अत: ये मजबूर परिवार भी मुस्लिम बने। वे जातियां जो उस समय समाज में उच्च वर्ग में आती थी उनसे अशोभनीय कार्य कराना जैसे कि बाल्मीकि समाज के लोगों को मैला उठाने का काम देना। दूसरा यदि कोई मुस्लिम किसी हिन्दू महिला के साथ जोर जबरदस्ती से सम्बन्ध बना लेता था तो उस महिला का मन न होते हुए भी मुस्लिम बने रहना पड़ता था क्योंकि हिन्दू परिवार उसे अस्वीकार कर देते थे।

इस तरह ज्यादातर लोग विभिन्न मजबूरियों के कारण मुस्लिम सम्प्रदाय में चले गए परन्तु भारत की आत्मा जोकि स्थायी है और यहाँ के लोगों के साथ जन्म जन्मान्तर से जुड़ी है और जुड़ी रहेगी वह आज भी इन बदले हुए मुस्लिमों में विभिन्न रूपों में विद्यमान है हालाँकि ज्यादातर मुस्लिम इन बातों से इन्कार करते है परन्तु यहाँ के मुस्लिमों में तमाम ऐसी बाते पाई जाती हैं जो कि इन्हें केवल मुस्लिम कहने के बजाय हिन्दू 'मुस्लिम' कहने पर मजबूर करती है।

जाति व्यवस्था पूरे विश्व में हिन्दुओं की एक विशिष्ट पहचान के रूप में देखी जाती है परन्तु भारत वर्ष के मुस्लिमों में आज भी विभिन्न जातियां पाई जाती हैं जैसे कि पठान, अंसारी, हज्जाम, कसाई, धोबी, मालिक, चौधरी, पटेल आदि और उससे बड़ी बात ये है कि यह समस्त जातियां विवाह के दौरान उसी तरह जाति व्यवस्था का पूर्ण पालन करती है जैसे कि हिन्दू पालन करते हैं। इससे आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह व्यवस्था पूर्ण रूप से हिन्दुत्व से प्रेरित है।

परन्तु गलत और घटिया इतिहास पढ़ाने की वजह से वह आज अपने ही पूर्वजों को भूलकर उन्हीं को मारने-काटने पर उतारू दिखाई दे रहे हैं जिस सम्प्रदाय ने उनके बाप दादाओं पर तमाम तरह के अत्याचार किये, आज उसी असभ्यता का गुणगान करते हुए नहीं थकते। गाय से लेकर वंदेमातरम्, योग से लेकर पूर्व भारतीय हिन्दू शासकों का विरोध करना अपना असली धर्म समझते हैं। यदि प्रिंस सुलेमान की बात को गंभीरता से लिया जाये तो सत्य के काफी करीब भी हैं, क्योंकि सयुंक्त अरब अमीरात मंदिर के लिए जमीन दान कर सकता है लेकिन यहाँ का मुस्लिम भारत के आदर्श महापुरुष राम के मंदिर में अड़चनें खड़ी करता दिखाई देता है। इस वजह से भी साफ कहा जा सकता है कि यहाँ मुस्लिम न होकर सिर्फ सनातन विचारधारा के विरोधियों का एक जमघट मात्र है।

-राजीव चौधरी

महाशय धर्मपाल जी की अपनी कलम से

'सहयोग' के लिए करें सहयोग

यूँ तो हम रोजाना ही सड़क से गुजरते हुये देखते हैं कि कुछ अभागे परिवार के बच्चे मैले-कुचैले कपड़े पहन कर सड़क पर भीख मांग रहे हैं। कोई सड़क के किनारे एक कपड़े का पर्दा तान कर अपने पूरे परिवार का तन ढ़कने की कोशिश कर रहा है, न ही वे पढ़ने जा पाते, न ही वे अच्छा कपड़ा पहन पाते, न ही उनके पैरों में चप्पल हैं और न ही जूते और ये चक्कर पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। जब दिल्ली जैसे शहर की ये स्थिति हैं, तो देश के गरीब जिलों और उनके गांवों की स्थिति क्या होगी।

एक दिन बैठे-बैठे मेरे मन में विचार आया कि आखिर हम इनकी कितनी कुछ सहयोग करे और अगर ऐसा हुआ तो हम काफी हद तक इन बच्चों की और अन्य व्यक्तियों की सहायता कर सकते हैं। विचार ये था कि हम सबके घरों में ऐसा बहुत सा सामान होता है जो हम देखेंगे कि हमारे कुछ भी काम नहीं आ रहा, क्यों न हम उनको किसी ऐसे जरूरतमंद तक पहुंचाएं जिसको इसकी शायद मेरे से ज्यादा जरूरत हो, मेरे पास तो इसका उपयोग नहीं हो पा रहा, पर किसी की ये मूल जरूरत पूरी करता हो। ऐसा विचार आते ही मैंने ये विचार पक्का कर लिया कि इस कार्य को शुरू करना ही है और अब पिछली 28 मई को इस कार्य को परमात्मा से आशीर्वाद लेकर शुरू कर दिया गया है।

महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच.

और अधिक आवश्यकता है, पर अपना सामान देते समय ये जरूर ध्यान रखें, कि वस्त्र फटा-पुराना न हो। सामान ठीक हालात में हो, पर आपके काम न आ रहा हो और दूसरी बात, कि वस्त्र दें, तो साफ करके, प्रैस करके ही दें ताकि तत्काल वहां किसी के काम आ सके। एक सप्ताह में ही हमारे पास तीन-चार हजार वस्त्र प्राप्त होना लोगों की अच्छी सोच को दर्शाता है। हमने भी इस कार्य को करने की तेजी दिखाते हुये लगभग 2200 वस्त्रों की पैकिंग करके आसाम, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़ और मध्य-प्रदेश के जरूरतमंद बच्चों और परिवारों तक सीधे पहुंचाने का काम भी किया है।

और कैसे सहायता कर सकते हैं। मेरे मन में दान की प्रवृत्ति सदा से रही है। भगवान ने मुझे दिया है तो मैं क्यों न आगे दूँ पर हर बात की एक सीमा तो होती ही है। कुछ लोग कितना सहयोग कितने लोगों को कर सकते हैं। ये सोचकर ही मेरे मन में ये विचार पैदा हुआ कि क्यों न प्रत्येक व्यक्ति कुछ न

हम सब महानुभावों से ये प्रार्थना करते हैं कि आपके घर में जो कुछ भी कपड़ा, जूता, खिलौना, पढ़ाई की किताब इत्यादि ठीक हालात में है आप उसे हमारे ''सहयोग'' की टीम को भेजें, हम उसे ठीक करके और अच्छी पैकिंग करके दिल्ली और देश भर के उन जरूरतमंदों तक पहुंचाएंगे जिनको इनकी

मैं आपको यही कहना चाहता हूँ कि ऐसा न समझें कि दान बहुत अमीर व्यक्ति ही कर सकता है, बहुत पैसे वाला व्यक्ति ही कर सकता है। वास्तव में दान तो हर वह व्यक्ति कर सकता है जिसके मन में किसी की सहायता करके उसको ऊंचा उठाने की इच्छा है। इसी आधार पर मैं कह सकता हूँ कि अगर सब लोग अपनी ओर से कुछ-कुछ सहयोग भी करेंगे तो आप किसी जरूरमंद की कुछ जरूरत तो पूरी कर ही सकते हैं। आओ ''सहयोग'' को सहयोग करें। अगर आप इसमें अपना सहयोग देना चाहते हैं तो मोबाइल नं. 9540050322 पर सम्पर्क करें।

आर्य जनों के लिए विशेष सूचना

''सहयोग'' के लिए चाहिए आपका सहयोग

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं यही सोच कर हमने यह विचार किया और महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना का शुभारम्भ किया गया ।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

विशेष निवेदन : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यह योजना अभी केवल दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों मे लागू की गई है। आप भी अपने क्षेत्रों में अपनी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत इस योजना को आरम्भ कर सकते हैं। - *महामन्त्री*

Veda Prarthana

God is Perceived by His Creations, the Vedas and the Universe

- Acharya Gyaneshwarya

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

Anti santam na jahati anti santam na pashyati. Devasya pashya kavyam na mamar na jiryati.

(Atharva Veda 10:8:32)

Anti santam God is so intimately close to the soul, ***na jahati*** that the soul cannot separate from God i.e. leave God or escape away from God, ***anti santam na pashyati although*** God is intimately encompassing us, we still do not see or perceive God because He is beyond the reach of our eyes or physical senses. ***Devasya pashya kavyam*** to perceive God see Supreme Divine Being's (i.e.God's) poetry in the form of the Vedas and/or the physical universe with its orderly organization, ***na mamar*** it neither perishes ***na jiryati*** nor it gets old (out of date), withered, or worn out

Dear God, you are Omnipresent and pervade everything in the universe. You are present even inside as well as outside our souls since eternity; this constant immutable state is both a wonder as well as perplexing for us because we do not fully understand it. Nobody has ever been able to disassociate You from his her soul, and vice-versa one's soul away from You. This relationship between God and our soul in Vedic scriptures is called ***vyapya-vyapaka[1].*** God as ***vyapaka*** pervades our soul.Our soul on the other hand is vyapya into which God pevades. This vyapya-vyapaka relationship is eternal without a beginning or an end. Whether our soul exists in a bound state existing as a human being or some other form of life e.g. animal, bird, insect or plant; in a dormant state during pralaya (dissolution of universe); or in a liberated state in moksha; in all thee three states you have pervaded and existed inside and outside our soul and will do so always in the future. The great wonder and surprise, however, is that we have so far not realized or appreciated this intimate vyapya-vyapaka relationship between You and us. Perhaps, we should not be so surprised beause we have so far tried to see and realize You with our physical eyes. Dear God You, however, have no shape, form or dimensions like our physical body; You are not a physical being and thus are invisible. The attributes of an eye on the other hand are to see a shape, form or color but You have none of these characteristics.

A person who wants to see or perceive God with his/her own physical eyes, should see Supreme Divine Being's (i.e. God's) creation the Vedas. By reading and understanding Vedas the great poetry of God, one can know the various attributes of God. Alternatively, to see God with one's eyes, one should look at the physical universe. By seeing the various galaxies and stars with their peculiar shapes and forms as the vastness of the universe with its orderly organization one can know and appreciate God the Master Creator's capabilities, His great strength-Omnipotence as well as His immense endless perfect knowledge-Omniscience.

Vedas are the Supreme Father's poetry for the welfare of all human beings. Vedas were at the beginning of mankind revealed by God to four rishis in the state of samadhi (the highest state of yoga : a superconscious state of meditation) where God is eventually revealed and the soul is one to One with God. These four rishis then taught other human beings the Veda mantras and their messages. Since then the Veda mantras and their messages have been passed on to subsequent generations to the present by gurus teaching their pupils both by the methods of memorization and oral recitation as well as the writing of the mantras. The main message of the Vedas is to teach how to reach God and attain peace and bliss while living in accordance with the dictates of dharma, The Vedas deal with both the spiritual, as well as secular aspects of knowledge, and include such topics as God, His attributes, the attributes of the soul. the relationships of human beings to one another and to the communty. society and other living things. Knowledge of the physical nature of the universe is also discussed. The messages of the Veda mantras are universal for the well being of all humans for all times and do not get old or out of date with the passage of time. Where ever in the universe there are other planets like our earth and also have human beings like us, there God has revealed the Vedas for the welfare of the inhabitants of the those planets.

The Sanskrit grammar of the Vedas is very strict and traditional, and even the smallest change could affect the basic meaning of the whole mantra. Therefore, the Vedas have been unaltered since their origin, and thus, represent the original revealed texts. They are unlike other Hindu scriptures where additions and substitutions have been incorporated. There are still students and persons in India who have memorized one or more of the Vedas. The Sanskrit used in the Vedas is quite rich, wherein a word often has more than one meaning. In addition, the Vedas contain extensive use of symbolism, metaphors or allegory to clarify their true meaning so everyone from the learned to the unschooled can understand the message. However, one needs a Vedic scholar who knows Vedas, Upanishads, Brahmana and Aranyaka Granths, Darshanas, Nirukta and other Upangas to properly translate Veda mantras. In contrast, if only a literal translation of the words of the scriptures is made rather than the most appropriate meaning in the context of the verses, then the meaning is very different from the original intent. Mistranslations of Vedas and their message by Western scholars e.g. Max Mueller, Griffith, Wilson and others, as well as by many Hindu scholars has resulted in a great disservice to the understanding of the Vedas and what they state about One God and Arya society. The mistran slations reflect a lack of knowledge and understanding of Vedic Sanskrit because these authours relied on traditional Sanskrit and its grammatical rules as well as their inappropriate use, thus failing to realize the proper context of a large numbe of translated mantras.

The other aspect of God's poetry is His creation the physical universe. God is the Master Architect and the Power that periodically creates the universe and maintains order in the constantly moving and changing universe. The physical universe is made of physical matter (prakriti) which though eternal is innately inert and must be activated by God. When one sees the vast universe with its orderly organization including various galaxies, stars, planets including earth, satellites like moon, with their peculiaar shapes and forms one can appreciate God's immense Capabilities, His great strength-Omniscience. God's universe is constantly moving and changing and does not get old or stale with the passage of time. Every day is a new day and different than the previous one. Also, when the universe's time is up God causes its dissolution, it does not happen suddenly or spontaneously.

Dear God, while by appreciating Your creations, various attributes and immense capabilities we can know of Your existence, however, this knowledge alone does not bring contentment, joy or bliss in our personal lives, to achieve these we must always follow Your virtuous path in life. We are still restless in our lives to directly attain Your realization whereby we can directly gain strength and knowledge from You as well as experience bliss. Dear God , please grace our souls and enlighten us so that we may directly perceive You. It is only then that the darkness and ignorance in our minds will be completely destroyed and we will overcome personal miseries and sorrows as well as experience full joy and bliss.

1. *This vyapya-vyapaka relationship is sometimes compared to that of a small cotton ball (soul) soaking or immersed in a large bucket or ocean of water (God), where water exists both inside the cotton ball and outside it. It must, however, be remembered that God and soul are not physical objects but pure consciousness and have no shape, form or dimensions and cannot be measured like physical objects.*

(For God's attributes, also see mantras 1,2,8,10,20,28,30, 31 and To understand the relationship of God, Souls and Prakriti/Universe, also see mantra # 30)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 26 (अ)

गतांक से आगे....

संस्कृतं सर्वेषां संस्कृतं सर्वत्र

शब्दान् जानीमहे वाक्यप्रयोगञ्च कुर्महे

ताडकम्।	पारितोषकम्।	ज्वालामुखी।	बिडाल:/मार्जार:/ल:।
गुलिका/औषधम्।	पादकन्दुकम्।	मूषक:।	गौमाता।
धनम्।	चायम्।	अशव:।	मकर:।
पत्रम्।	पनीयम्ध्सूप:।	गर्दभ:।	उष्ट्र:।
पत्रपेटिका।	रोटिका।	वराह:।	पाटलम्।
कर्गजम्/कागदम्।	पयोहिम:।	वनवराह:।	जपाकुसुमम्।
सूचिपत्रम्।	मधु।	मधुकर:ध्षट्पद:।	पर्णम्।
दिनदर्शिका।	सेवफलम्।	मूषिक:।	सूर्य:।
कर्त्तरी।	कलिङ्ग फलम्।	गज:।	चन्द्र:।
पुस्तकाणि।	नारङ्ग फलम्।	अवि:।	अर्धचन्द्र:।
वर्णा:।	आम्र फलम्।	वानर:/मर्कट:।	नक्षत्रम्।
दूरदर्शकम्।	द्राक्षाफलाणि।	सर्प:।	मेघ:।
सूक्ष्मदर्शकम्।	कदली फलम्।	मीन:।	क्रीडनकम्।
पत्रिका।	रक्तफलम्।		
सङ्गीतम्।			

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

लाला लाजपतराय जी भी फंसाए गए

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में बीकानेर में अकाल पड़ा था। आर्यसमाज ने वहाँ प्रशंसनीय सेवा कार्य किया। लाला लाजपतरायजी ने आर्यवीरों को मरुभूमि राजस्थान में अनाथों की रक्षा व पीड़ितों की सेवा के लिए भेजा। विदेशी ईसाई पादरी आर्यो के उत्साह और सेवाकार्य को देखकर जल-भुन गये। अब तक वे भारत में बार-बार पड़ने वाले दुष्काल के परिणामस्वरूप अनाथ होने वाले बच्चों को ईसाई बना लिया करते थे।

विदेशी ईसाई पादरियों ने लाला लाजपतराय सरीखे मूर्धन्य देश-सेवक व आर्यनेता पर भी अपहरण का दोष लगाया और अभियोग चलाया। सोना अग्नि में पड़कर कुन्दन बनता है। यह विपदा लालाजी तथा आर्यसमाज के लिए एक ऐसी ही अग्निपरीक्षा थी।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

के मंत्री श्री बलदेव सचदेवा जी का सम्मान सभा मंत्री श्री वीरेन्द्र सरदाना जी ने किया। गोष्ठी में सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी भी उपस्थित थे।

सभा द्वारा आर्य समाजों के लिए बनाई गयी गाइड लाइन की पुस्तिका एवं सभा द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं से सम्बन्धित पुस्तिका एवं सभा द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं से सम्बन्धित पुस्तिका उपस्थित सभी सदस्यों को वितरित की गई। इन योजनाओं के बारे में महामंत्री जी ने पुस्तिका एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रतिनिधियों को विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इसके अतिरिक्त भी बहुत सारी जानकारियां हैं जो समयाभाव के कारण इस समय देना सम्भव नहीं है। अतः मुख्य-मुख्य बातों को ही इस गोष्ठी में सम्मिलित किया जा सका है। गाइड लाइन के विषय में महामंत्री जी ने बताया कि सभी पदाधिकारी इसे घर ले जाकर पढ़ें तथा आर्य समाजों में इसमें दिये गये सुझावों को लागू करने का प्रयास करेंगे तो आर्य समाजों की स्थिति में सुधार तथा सुन्दरता आयेगी और इससे समाज में सदस्यों की संख्या में भी वृद्धि होगी जिससे संगठन मजबूत होगा। जो आर्य समाजें अच्छी स्थिति में हैं वे अपने आस-पास नई आर्य समाजें खोलने की योजना पर कार्य करें। इस प्रकार आर्य समाज का विस्तार होगा। अन्त में आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी के प्रधान श्री हरीश कालरा ने सभी का धन्यवाद किया। सभी उपस्थित महानुभावों के लिए भोजन एवं जलपान की व्यवस्था करने के लिए सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जीने आर्यसमाज के पदाधिकारियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। पश्चिमी दिल्ली की द्वितीय गोष्ठी 2 जुलाई को आर्यसमाज कीर्ति नगर में होगी। जो आर्यसमाजें प्रथम गोष्ठी में न पहुंच सकीं हों वे कृपया इसमें अवश्य पहुंचें। *-सुखबीर सिंह, मंत्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष — यज्ञ विधि - प्रक्रिया - एकरूपता.....

नहीं है यदि विधिवत् तरीके से यज्ञ किया जाए जैसे जब अग्नि पूर्ण रूप से जब प्रज्ज्वलित हो जाए तभी उसमें उचित मात्रा में सामग्री आदि डालनी चाहिए तब तो पुण्य ही पुण्य है लेकिन यदि अग्नि मंद होगी और सामग्री की मात्रा ज्यादा होगी या सामग्री शुद्ध नहीं हो तो पाप ही पाप है। प्रधान जी ने आगे कहा ये पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर मील का पत्थर साबित होंगे यदि इनकी जानकारी जन साधारण तक पहुंच जाए।''

आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी के शिविर को सफल बनाने में आर्य समाज सी-3 प्रधान सर्वश्री शिव कुमार मदान, अजय तनेजा, रमेश जी, सुखबीर आर्य, सुरेश राजपूत, सुरेन्द्र वर्मा, कौशल किशोर शुक्ला जी तथा झिलमिल कालोनी के शिविर को सफल बनाने में समाज के प्रधान श्री हरिओम बसंल जी, मन्त्री श्री सुनहरी लाल यादव जी अन्यअनेक महानुभावों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर में वैज्ञानिक जानकारी सविस्तार समझाने में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य का विशेष योगदान रहा। *- सतीश चड्ढा, संयोजक*

शोक समाचार

श्री रविकान्त आर्य को मातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के मन्त्री श्री रविकान्त आर्य जी की पूज्य माताजी श्रीमती लीलावती जी का 27 जून, 2017 को प्रातः 5:45 बजे उनके बक्शी नगर आवास पर निधन हो गया। वे लगभग 88 वर्ष की थी। उनका अन्तिम संस्कार जोगीगेट श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 30 जून, 2017 को आर्यसमाज बक्शी नगर में सम्पन्न हुई।

श्री राजकुमार आर्य जी को मातृशोक

आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर, नई दिल्ली के प्रधान श्री राजकुमार आर्य जी की पूज्यमाता जी श्रीमती चमेली देवी जी का 93 वर्ष आयु में 24 जून को रात्रि 10 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी बाग स्थित श्मशान घाट पर अगले दिन 25 जून को किया गया जिसमें सभा अधिकारियों सहित क्षेत्रीय आर्यसमाजों के अनेक पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 4 जुलाई को बाबा नत्था सिंह वाटिका, निकट पंजाबी बाग क्लब, पंजाबी बाग, नई दिल्ली में सायं 3 से 4 बजे सम्पन्न होगी।

श्री कृष्णपाल आर्य को पितृशोक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के व्यायाम शिक्षक श्री कृष्णपाल आर्य जी के पूज्य पिता श्री मछन्दर सिंह (पलड़ी बागपत निवासी) का 16 जून, 2017 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 26 जून, 2017 को उनके दिल्ली स्थित निवास पर सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीरपुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी कालोनी - जहांगीरपुरी में आर्य समाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोगी संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक
खाता सं. 33723192049
IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य — **प्रधान**
विनय आर्य — **महामन्त्री**

पृष्ठ 4 का शेष

(मघवन्) तथा 'महाराजाधिराजेश्वर)' कहकर पुकारा तथा उनसे चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य (रूपी) धन को प्राप्त कराने की प्रार्थना की। यह ईश्वरभक्त दयानन्द ही है जो परमात्मा से आर्यों के अखण्ड होन की विनय करता है कि 'अन्य देशवासी' राज हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।' (यजुर्वेद के मंत्र 37/14 'इन्द्र पिन्वस्त' की व्याख्या में) सामान्यतया भक्त अपने आराध्य से सुख, सौभाग्य, आरोग्य, धन-धान्य, कीर्ति ऐश्वर्य आदि की याचना करता है। दयानन्द अपने परमात्मा से देश के लिए स्वराज्य तथा शिष्टजनों (आर्यों) के साम्राज्य की याचना के प्रति जो सम्बोधन शब्द प्रयुक्त किये हैं वे भी विशिष्ट अर्थवत् लिये हैं। शतक्रतो (अन्त कार्येश्वर), महाराजाधिराज परमेश्वर, सौख्य-सौख्य-प्रदेश्वर, सर्वविद्यामय आदि। वस्तुतः अनन्त गुणों वाले परमात्मा के सम्बोधन भी अनन्त ही होंगे।

परमात्मा की भक्ति दिखाने की वस्तु नहीं है। मध्यकाल में मूर्तिपूजा, नाम जप, तिलक, कण्ठी-छाप आदि साम्प्रदायिक प्रतीकों के धारण को भक्ति का साधन माना गया था। दयानन्द की सम्मति में परमात्मा के विविध गुणों के वाचक शब्दों के उल्लेखपूर्वक उस परम सत्ता को नमन करना ही उसकी भक्ति का उत्कृष्ट रूप है। यदि हम उनके द्वारा रचित ग्रन्थों के आरम्भ के मंगल सूचक वाक्यों को देखें तो ज्ञात होगा कि स्वामी जी के लिए परमात्मा क्या है और कैसा है? यहां कुछ ऐसे ही ग्रन्थारम्भ में लिखे गये नमस्कार विधायक वाक्य दिये जा रहे हैं जो दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा के स्वरूप तथा गुणों के ज्ञापक हैं:-

1. ओ३म् सच्चिदानन्देश्वरायम नमः। -सत्यार्थ प्रकाश

2. ओ३म् तत्सत्परब्रह्मणे नमः। -आर्याभिविनय

3. ओ३म् ब्रह्मात्मने नमः। -वर्णोच्चारण शिक्षा

4. ओ३म् खम्ब्रह्मा। -काशी शास्त्रार्थ

5. ओ३म् खम्ब्रह्मा। -सत्यधर्म विचार

6. गोकरुणानिधि में परमात्मा का स्मरण इस प्रकार किया गया है-**'ओ३म् नमो विश्वम्भराय जदीश्वराय'**। इसमें दयानन्द का भाव यह है कि जो विश्वभर है वही तो गो आदि उपयोगी प्राणियों का भरण-पोषण करने की भी सामर्थ्य रखता है। जो ईश्वर सर्वशक्तिमान है उसमें गौ आदि की रक्षा करने का भी सामर्थ्य है।

7. ओ३म् नमो निर्भ्रमाय जगदीश्वराय।' -अनुभ्रमोच्छेदन

वेद के निर्भ्रान्त ज्ञान को देने वाला परमात्मा स्वयं निर्भ्रम है। ऐसे सार्थक नमस्कार वाक्य लेखक की परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति दर्शाते हैं।

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज रोहतास नगर, शिवाजी पार्क शाहदरा दिल्ली

प्रधान - श्री सुखबीर सिंह त्यागी
मन्त्री - श्री विकास कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष - जगदीश चन्द

आर्य समाज मोलड़बन्द विस्तार, बदरपुर, नई दिल्ली

प्रधान - श्री त्रिषपाल आर्य
मन्त्री - श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
कोषाध्यक्ष - श्री रणजीत सिंह रावत

आर्य समाज टैगोर गार्डन विस्तार, ए.डी. ब्लाक, नई दिल्ली

प्रधान - श्री अशोक आर्य
मन्त्री - श्री ओम प्रकाश जसूजा
कोषाध्यक्ष - श्री सुरेश भगत

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 जून, 2017 से रविवार 2 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/30 जून, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 जून, 2017

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा – हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

मूल्य : 205/- रुपये प्रचारार्थ मूल्य : 150/- रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

प्रतिष्ठा में,

॥ ओ३म् ॥

आधुनिक भारत

ले चलें शिखर की ओर

एक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रस्तुति

22 जुलाई 2017

तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

प्रात: 9 से दोपहर 1 बजे तक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली

के अन्तर्गत समस्त

आर्य शिक्षण संस्थाओं का

सामूहिक विचारोत्सव

एवं विशिष्ट सांस्कृतिक प्रस्तुति

सभी आर्यजन एवं विद्यार्थीगण, अभिभावकों सहित सादर आमन्त्रित है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य – प्रधान

सुरेन्द्र कुमार रैली – प्रस्तोता

विनय आर्य – महामन्त्री

सत्यानंद आर्य – संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह